Crop Weather Watch Group Advisory
U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

फसल मौसम सतर्कता समूह (क्राप वेदर वॉच ग्रुप) की दसवीं बैठक की संस्तुतियॉ

दिनॉक : 08 जुलाई, 2015
समय : 11.00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2015–16 की दसवीं बैठक प्रो. राजेन्द्र कुमार, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 8 जुलाई, 2015 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में च.शे.आ. कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर एवं न.दे. कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद के मौसम वैज्ञानिक एवं पूर्व धान प्रजनक; कृषि विभाग, गन्ना विभाग, उद्यान विभाग, पशुपालन विभाग, रेशम विभाग, मत्स्य विभाग, आई.आई.एस.आर., लखनऊ, रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेंटर, लखनऊ एवं परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार (दिनांक 8 जुलाई से 14 जुलाई, 2015 तक) प्रदेश के सभी क्षेत्रों में मध्यम से घने बादल छाये रहने के साथ प्रदेश के तराई एवं पश्चिमांचल क्षेत्रों में सप्ताह के प्रारम्भिक तीन दिनों में मध्यम से भारी वर्षा एवं अंतिम चार दिनों में हल्की से मध्यम तथा स्थानीय स्तर पर कहीं–कहीं पर भारी वर्षा के आसार हैं। मानसून की नाद (ट्रफ लाइन) अनूपगढ़ एवं अलीगढ़ से होते हुए इसका अक्ष उत्तर–पूर्व बंगाल की खाड़ी की तरफ है। बंगाल की खाड़ी में कम वायुदाब का क्षेत्र विकसित होने से नमी चक्रवाती परिसंचरण के माध्यम से ऊपरी सतह पर उपलब्ध होने एवं क्षेत्रीय चक्रवात के शामिल होने से हल्की से मध्यम वर्षा मध्य उत्तर प्रदेश एवं बुंदेलखण्ड क्षेत्रों में प्रारम्भिक तीन दिनों तक तथा उसके बाद सप्ताह के अंतिम दिनों में स्थानीय स्तर पर हल्की वर्षा के आसार हैं। इस सप्ताह प्रदेश के सभी क्षेत्रों में प्रमुखतया दक्षिण–पूर्वी एवं उत्तर–पूर्वी हवाओं के 10–12 किमी. प्रति घण्टे की औसत गति से चलने की सम्भावना है। प्रदेश के सभी क्षेत्रों में अधिकतम तापमान 30–32 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 22–24 डिग्री सेल्सियस रहने की सम्भावना है जो सामान्य से 1–3 डिग्री सेल्सियस कम है। प्रदेश की अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता औसत रूप से 85–95 प्रतिशत एवं न्यूनतम आर्द्रता 70–80 प्रतिशत रहने की सम्भावना है। इस सप्ताह वातावरण आर्द्र रहेगा।

कृषि निदेशालय, उ.प्र. से दिनांक 6 जुलाई, 2015 तक प्राप्त वर्षा आंकड़ों के अनुसार प्रदेश के 75 जनपदों में अब तक की सामान्य वर्षा 149.4 मिमी. के सापेक्ष 115.2 मिमी. प्राप्त हुई है जो सामान्य की 77.1 प्रतिशत है जबकि गत वर्ष अब तक 68.2 मिमी. वर्षा प्राप्त हुई थी जो सामान्य की मात्र 45.6 प्रतिशत थी। अब तक प्राप्त वर्षा ऑकड़ों के आधार पर सामान्य से अधिक वर्षा (120 प्रतिशत अथवा अधिक) के अन्तर्गत 12 जनपद, सामान्य वर्षा (80–120 प्रतिशत) के अन्तर्गत 17 जनपद, सामान्य से कम (60–80 प्रतिशत) 15 जनपद, 13 जनपदों में न्यून (40–60 प्रतिशत) एवं 18 जनपदों में अति न्यून (40 प्रतिशत से कम) वर्षा प्राप्त हुई है। प्रदेश के मुरादाबाद जनपद में सबसे अधिक वर्षा 326.7 मिमी. प्राप्त हुई है जो सामान्य से 110.3 प्रतिशत अधिक है।

कृषि विभाग, उ.प्र. से प्राप्त आच्छादन आंकड़ों के अनुसार दिनांक 7 जुलाई, 2015 तक प्रदेश में कुल खरीफ आच्छादन लक्ष्य 95.18 लाख हे. के सापेक्ष 14.69 लाख हे. की प्रतिपूर्ति हो चुकी है जो लक्ष्य का 15.43 प्रतिशत है। धान की नर्सरी का आच्छादन लक्ष्य 4.03 लाख हे. के सापेक्ष 3.65 लाख हे. की पूर्ति हो चुकी है जो लक्ष्य का 90.58 प्रतिशत है। धान का आच्छादन लक्ष्य 60. 45 लाख हे. के सापेक्ष रोपाई की प्रतिपूर्ति 10.13 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 16.76 प्रतिशत है। खरीफ की अन्य फसलों में मक्का के आच्छादन लक्ष्य 7.74 लाख हे. के सापेक्ष 2.31 लाख हे. में प्रतिपूर्ति हुई है जो लक्ष्य का 29.81 प्रतिशत है। दहलनी फसल की मुख्य फसल अरहर की बुआई 3.59 लाख हे. के सापेक्ष 0.65 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 18.32 प्रतिशत है। ज्वार की बुआई निर्धारित लक्ष्य 1.80 लाख हे. के सापेक्ष 0.16 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 9.04 प्रतिशत है।

अतः प्रदेश में फसल एवं मौसम के इस परिप्रेक्ष्य में किसानों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

- हरी खाद के लिए बोई गई सनई, ढेंचा एवं मूँग की तैयार फसल की पलटाई कर पानी का भराव कर दें। पलटाई के लगभग 10 दिन बाद धान की रोपाई करें।
- खेत की तैयारी करते समय मृदा शोधन के लिए बवेरिया बेसियाना तथा ट्राईकोडर्मा 2–5 किग्रा0/हे. के साथ 65–70 किग्रा. गोबर की खाद/हे. की दर से डालें। रोपाई के लिये मौसम अनुकूल है अतः रोपाई युद्धस्तर पर करें।
- धान की तैयार पौध की रोपाई जहां तक संभव हो ट्राईकोडर्मा से उपचारित करके ही करें।
- रोपाई से पहले पौध की चोटी काट दी जाए इससे तनावेधक व हिस्पा कीट का प्रकोप कम होगा।
- पूर्व में विषम परिस्थितयों के कारण ज्यादा अवधि वाली पौध (30–35 दिन) की रोपाई 2–3 पौध प्रति पूंज के स्थान पर 3–4 पौध प्रति पुंज की रोपाई करें। विशेष रूप से ऊसर एवं क्षारीय भूमियों में 3–4 पौध प्रति पुंज की रोपाई करें।
- रोपाई के बाद जो पौधे मर जाएं उनके स्थान पर दूसरे पौधों को तुरन्त लगा दें ताकि प्रति इकाई पौधों की संख्या कम न होने पाये।
- स्री पद्धति से 1 हे. रोपाई हेतु मात्र 1000 वर्ग फुट क्षेत्रफल की पौध पर्याप्त है तथा नर्सरी की क्यारियॉ 4–5 इंच ऊँची हों। स्री पद्धति के लिये 6 किग्रा. प्रति हे. की दर से बीज की नर्सरी में बुआई करें। स्री पद्धति की नर्सरी में जहॉ तक संभव हो देशी खाद का ही प्रयोग करें। 8–12 दिन की अवधि की नर्सरी की रोपाई करें।
- अरहर, मूंगफली एवं तिल की बुआई प्राथमिकता के आधार पर करें।
- दलहनी एवं तिलहनी फसलों में जल भराव न होने दें, जल निकास का उचित प्रबन्ध करें।
- वृक्षारोपण हेतु मौसम अनुकूल है। अतः वृक्षारोपण करें।
- खरीफ 2015 के लिए फसलों के बीमा कराने की अवधि संशोधित राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना में 31 जुलाई तक है। इस योजना के अंतर्गत जिन किसानों के किसान क्रेडिट कार्ड चालू हैं वे अपनी फसलों का बीमा सम्बन्धित बैंक कर्मचारियों से करा लें।
- कृषि विभाग द्वारा चलायी जा रही पारदर्शी किसान योजना के अंतर्गत कृषि निवेश, कृषि यंत्र, बीज, कृषि रसायनों को प्राप्त करने हेतु अपना रजिस्ट्रेशन कराएँ। किसान कृषि विभाग की वेबसाइट www.upagriculture.com पर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं।

धान की खेती

- वर्षा जल संचित करने हेतु रोपाई वाले खेत की मजबूत मेढ़बंदी करें।
- धान की रोपाई प्रत्येक वर्गमीटर में 50 हिल तथा प्रत्येक हिल पर 2–3 पौधे लगायें।
- धान में खरपतवार के नियन्त्रण के लिए रोपाई के 3 दिन के अन्दर पेन्डीमेथिलीन 3.3 ली./हे. अथवा ब्यूटाक्लोर 50 ई.सी.(1.5 किग्रा./हे.) अथवा प्रिटिला क्लोर 50 ई.सी. 1.25 ली./हे. की दर से 500–600 ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें जिससे खरपतवार का जमाव प्रारम्भिक अवस्था पर ही रोका जा सके।
- खैरा रोग जिंक की कमी के कारण नर्सरी में लगता है। इस रोग में पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं जिस पर बाद में कत्थई रंग के धब्बे बन जाते हैं। खैरा रोग के नियन्त्रण हेतु 5 किग्रा. जिंक सल्फेट को 20 किग्रा. यूरिया अथवा 2.50 किग्रा. बुझे हुए चूने को प्रति हे. लगभग 1000 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- सफेदा रोग लौह तत्व की कमी के कारण नर्सरी में लगता है। इस रोग में नई पत्ती कागज के समान सफेद रंग की निकलती है। सफेदा रोग के नियन्त्रण हेतु 5 किग्रा. फेरस सल्फेट को 20 किग्रा. यूरिया अथवा 2.50 किग्रा. बुझे हुए चूने को प्रति हे. लगभग 1000 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।

मक्का की खेती

- मक्का की शीघ्र पकने वाली संकर प्रजातियों यथा जे.एच.–3459, प्रकाश, पूसा मक्का–5, विवेक संकर मक्का–27, शक्ति–1, एम.एम.एच.–113, एक्स–1123 तथा संकुल प्रजातियों यथा आजाद उत्तम, प्रगति, गौरव, कंचन तथा सूर्या की बुआई यथाशीघ्र करें।
- मक्के की निराई तथा विरलीकरण के बाद नत्रजन की कुल संस्तुत मात्रा का एक चौथाई टॉप ड्रेसिंग के रूप में दें।
- मक्का में खरपतवार नियंत्रण के लिए एट्राजीन 2 किग्रा./हे. की दर से बुआई के 2 दिन के अन्दर प्रयोग करें। यदि मक्के के बाद आलू की फसल ली जानी है तो एट्राजीन के स्थान पर लासो 50 ई.सी. 5 ली./हे. की दर से प्रयोग करें।

सावां कोदों की खेती

- सावां की संस्तुत प्रजातियों यथा टी–46, आई.पी.–149, यू.पी.टी.–8, आई.पी.एम.–97, आई.पी.एम.–100, आई.पी.एम.–148 व आई.पी.एम.–151 की बुवाई 15 जुलाई तक समाप्त करें।
- कोदों की संस्तुत प्रजातियों जे.के.–6, जे.के.–62, जे.के.–2, ए.पी.के.–1, जी.पी.वी.के.–3 की बुवाई 15 जुलाई तक समाप्त करें।

बाजरा की खेती

- बाजरा की संकुल प्रजातियों यथा आई.सी.एम.बी.–155, डब्लू.सी.सी.–75, आई.सी.टी.पी.–8203, राज–171, न.दे.एफ.बी–3, व संकर प्रजातियों यथा पूसा–23, पूसा–322 तथा आई.सी.एम.एच.–451 की बुवाई करें।

अरहर की खेती

- अरहर की बुवाई मेढ़ों पर करना लाभप्रद है।
- कम अवधि वाली बोई गयी अरहर में विरलीकरण एवं निराई करें।
- अरहर की देर से पकने वाली प्रजातियों बहार, अमर, नरेन्द्र अरहर–1, आजाद, पूसा–9, मालवीय विकास, मालवीय चमत्कार, नरेन्द्र अरहर–2 की बुवाई करें।

मूंगफली की खेती

- मूंगफली की प्रजातियों यथा चित्रा, कौशल, प्रकाश, अम्बर, टी0जी0–37 ए , दिव्या व उत्कर्ष की बुवाई 15 जुलाई तक समाप्त करें।
- मूंगफली बोने से पूर्व बीज को थीरम 2.0 ग्रा0 और 1 ग्रा. कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत/किलो बीज की दर से शोधित करें अथवा ट्राईकोडर्मा 4 ग्रा. तथा 1 ग्रा. कार्बाक्सिन/किग्रा. बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। इस शोधन के 5–6 घण्टे बाद बीज को मूंगफली के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

गन्ना की खेती

- शरदकालीन गन्ने एवं पेड़ी में हल्की मिट्टी चढ़ायें जिससे बढ़वार के साथ गन्ना ना गिरे तथा देर से निकलने वाले कल्ले कम से कम निकलें क्योंकि जुलाई के उपरान्त निकलने वाले कल्ले से उस वर्ष गन्ना नहीं बन पाता है। पेड़ी की बंधाई करें।
- चोटी बेधक कीट की निगरानी व नियंत्रण हेतु यौन गंध पास का प्रयोग करें।
- चोटी बेधक कीट की तृतीय पीढ़ी तितली के नियंत्रण हेतु फ्यूराडान 3 जी या फोरेट 10 जी की 33 किग्रा. मात्रा प्रति हे. की दर से गन्ने की जड़ों के पास नम भूमि में डालें।
- गन्ना बेधक कीट जैसे तना बेधक व पोरी बेधक के नियंत्रण हेतु अन्ड परजीवी ट्राइकोग्रामा कीलोनिस के 50 हजार वयस्क कीट प्रति हे. 10 दिनों के अन्तराल पर जुलाई से सितम्बर तक पत्तियों में बांधें।
- पायरीला का प्रकोप होने पर तथा परजीवी (इपीरिकेनिया मेलानोल्यूका) न पाये जाने की स्थिति में क्वीनालफास 25 प्रतिशत घोल 0.80 ली. प्रति हे. 625 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

बागवानी

- आम, अमरूद, ऑवला, लीची व नीबू वर्गीय फलों का रोपण करें।
- आम के नवीन बाग लगाते समय परागण हेतु उपयुक्त किस्मों का 10 प्रतिशत रोपण अवश्य करें। दशहरी प्रजाति के साथ बाग में बम्बई हरा, गौरजीत को परागण किस्म के रूप में रोपित करें।
- आम के परिपक्व फलों की तुड़ाई 8–10 मिमी. लम्बी डंठल के साथ करें, जिससे फलों पर चेप न लगने पाये। इससे स्टेम इण्ड रॉट बीमारी नहीं लगती, पकने पर फल दाग रहित आकर्षक होते हैं तथा भण्डारण क्षमता 2–3 दिन बढ़ जाती है। तुड़ाई के समय फलों को चोट व खरोंच न लगने दें तथा मिट्टी के सम्पर्क से बचायें।
- फलों की तुड़ाई के लिए उपोष्ण बागवानी संस्थान द्वारा विकसित तुड़ाई यंत्र उपयुक्त है जिससे प्रति घण्टे 800–1000 फल तोड़े जा सकते है। यह यंत्र संस्थान में उचित मूल्य पर उपलब्ध है। फलों की तुड़ाई के बाद ग्रेडिंग करें।
- पौध प्रवर्धन हेतु आम में ग्राफि्टंग का कार्य करें।
- आम की गुठली एकत्र करें।
- लीची व नींबू में गूँटी बॉधने का कार्य करें।
- केले की पुत्ती का रोपण करें। उपलब्धतानुसार केले की ऊतक संवर्धित प्रजाति जी–9 की पौध वरीयता पर लगायें।
- केले में एक तलवार पुत्ती को छोड़ते हुए शेष पुत्तियों की कटाई करें तथा फल वाले पौधों में स्टेकिंग (सहारा) दें।

सब्जियों की खेती

- बैंगन व मिर्च की तैयार पौध की मेड़ों पर रोपाई करें।
- वर्षा कालीन कद्दूवर्गीय सब्जियों यथा लौकी, तोरी, खीरा, सीताफल, करेला व टिण्डा की बुआई करें।
- अगेती फूलगोभी में निकाई–गुड़ाई करें।
- गोल बैंगन, मध्य कालीन फूलगोभी तथा शिमला मिर्च की अगस्त माह में रोपाई हेतु बीज की बुवाई उठी हुई क्यारियों तथा लो टनल में करें।
- हल्दी, अरबी एवं अदरक में जल निकास का उचित प्रबन्ध करें।
- भिण्डी, ग्वार एवं लोबिया की बुआई करें।

पशुपालन

- खरीफ चारा फसलों यथा ज्वार, लोबिया, मक्का, बाजरा, ग्वार आदि की बुवाई हेतु अनुकूल मौसम है।
- बड़े पशुओं में गलाघोंटू बीमारी की रोकथाम हेतु एच.एस. से तथा लंगड़िया बुखार की रोकथाम हेतु बी.क्यू. वैक्सीन से टीकाकरण करायें। यह सुविधा सभी पशु चिकित्सालय पर उपलब्ध है।
- पशुओं को खनिज लवण अवश्य दें एवं पर्याप्त मात्रा में साफ पानी पिलायें।
- दुहान से पहले पशुओं को सुबह शाम ताजे पानी में नहलायें और खरहरा करें जिससे पशुओं में दूध उत्पादन कम न हो।
- पशुओं को तीन माह में एक बार कृमिनाशी दवा का पान अवश्य करायें।
- 12 प्रतिशत वार्षिक ब्याज की दर से 5 वर्ष तक ब्याज की प्रतिपूर्ति की जाने वाली कामधेनू, मिनीकामधेनू तथा माइक्रोकामधेनू योजना का लाभ पशुपालक अवश्य उठायें।
- मुर्गियों का बिछावन उलट–पलट कर उसमें चूना मिलायें।
- भेड़–बकरियों को भींगने से बचायें।

मत्स्य पालन

- जिन मत्स्य पालकों के तालाबों में अवांछनीय मत्स्य प्रजातियां पाई जा रही है उनमें बार–बार जाल चलाकर मछलियों को निकाल लें।
- ऐसे तालाब जिनमें पानी सूखने की सम्भावना नहीं है, उनमें अवांछनीय मछलियों के नियंत्रण हेतु 25 कु./हे. की दर से 1 मीटर गहरे तालाब में महुआ की खली डाल दें। 24 घंटे में मछलियॉ सतह पर आ जाएंगी। इन्हें बेच दें। महुआ की खली डालने के 15 दिन बाद तालाब तैयार हो जाएगा।
- जिन मत्स्य पालकों ने अभी तक चूने एवं खाद का प्रयोग नहीं किया है, उन्हें सलाह दी जाती है कि वे शीघ्र अपने तालाब में बुझा हुआ चूना 2.5 कुं. प्रति हे. की दर से एवं गोबर की खाद 1 टन/हे. की दर से डालें एवं इनलेट/आउटलेट यदि चोक हों तो उन्हें साफ कर दें एवं इनलेट तथा आउटलेट पर जाली लगा दें तथा तालाब में पानी भरे।
- तालाब का जलस्तर 5 से 6 फुट बनाये रखें। कतला, रोहू, नैन प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन का यह उपयुक्त समय है। कतला, रोहू, नैन मत्स्य प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन करायें साथ ही आवश्यकतानुसार सिल्वर कार्प एवं ग्रास कार्प मत्स्य प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन भी करायें।
- निजी क्षेत्र की कुछ हैचरियों पर उत्प्रेरित प्रजनन के मध्यम से मत्स्य बीज का उत्पादन किया जा रहा है अतः इच्छुक मत्स्य पालक अपने तालाबों में मत्स्य बीज का संचय करायें।
- जिन मत्स्य पालकों ने अभी तक तालाब की तैयारी नहीं की है वह मत्स्य पालन हेतु तालाबों की तैयारी यथाशीघ्र कर लें।
- निजी क्षेत्र की अधिकांश हैचरियों पर तथा उ.प्र. मत्स्य विकास निगम की हैचरियों पर उत्प्रेरित प्रजनन के माध्यम से मत्स्य बीज का उत्पादन कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। निजी क्षेत्र की हैचरियों पर मत्स्य बीज उपलब्ध है। उ.प्र. मत्स्य विकास निगम की हैचरियों से 11 जुलाई से मत्स्य बीज का वितरण कार्य प्रारम्भ किया जायेगा। इच्छुक मत्स्य पालक अपने तालाबों में मत्स्य बीज का संचय करायें। संचित मत्स्य बीज को शरीर भार का 1–2 प्रतिशत पूरक आहार दें।
- मत्स्य बीज को सरकारी केन्द्रों अथवा निजी हैचरियों अथवा प्रजनन केन्द्र से भुगतान देकर प्राप्ति सुनिश्चित कर लें।
- संचय की गई अंगुलिकाओं का पालन–पोषण करें तथा प्लवक की पर्याप्त मात्रा तालाबों में प्रत्येक माह खादीकरण कर बनाये रखें।
- प्रत्येक माह में एक बार जाल चलाकर मछलियों की बढ़ोत्तरी व स्वास्थ्य की जॉच करते रहें।
- मत्स्य बीज को 15 मिनट तक पानी में पैकेट बिना खोले रखें तत्पश्चात तालाब में पैकेट से मत्स्य बीज छोड़ें जिससे तापमान के अंतर से मत्स्य बीज को क्षति न हो।
- थाई मॉगुर मछली पालना प्रतिबन्धित है। इसको न पाला जाये।

रेशम पालन

- टसर बीजागारों में संरक्षित कोयों में इमरजेंस प्रारम्भ हो गई है। अतः कीटाण्ड उत्पादन कार्य प्रारम्भ रखें।
- रेशम फार्मों की सुरक्षा हेतु बबूल की हेज तैयार करने हेतु फार्मों के चारों तरफ खाई में बबूल बीज की बुवाई शीघ्र सम्पन्न करें।
- शहतूत उद्यानों में कर्षण कार्य के पश्चात् निर्धारित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों के मिश्रण का प्रयोग करें।
- रेशम के होस्ट प्लाण्ट का नये क्षेत्र में वृक्षारोपण जारी रखें।
- अरण्डी उत्पादक उन्नत किस्म के बीज प्राप्त कर तैयार की गयी भूमि में अरण्डी की बुआई करें।
- रेशम कीटपालन के इच्छुक कृषक अपने नजदीकी रेशम अधिकारी/प्रभारी से सम्पर्क कर जानकारी प्राप्त कर कीटपालन कार्य करें।

वानिकी

- पौधशाला में अंकुरण क्यारियॉ तैयार कर आम, गुलमोहर, महुआ, कटहल, जामुन, कंजी, नीम आदि के बीजों की बुआई शीघ्र कर लें। अंकुरित पौधों को रूट ट्रेनर/थैलियों में प्रतिरोपित कर रख दें।

- क्षेत्र में पौध रोपण का कार्य व पौध बिक्री पूर्ण कर लें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक 16 जुलाई, 2015 को प्रातः 11:00 बजे आयोजित किया जाना प्रस्तावित है।

नोटः

- क्राप वेदर वाच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियाँ वेबसाईट www.upcaronline.org पर भी उपलब्ध है।
- क्राप वेदर वॉच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियाँ इफको किसान संचार लिमिटेड के द्वारा प्रदेश के ९ लाख कृषकों को वॉयस एस.एम.एस. के रूप में कृषकों को प्रेषित की जा रही हैं।
- आंचलिक मौसम केन्द्र, मौसम विभाग, अमौसी द्वारा मुफ्त टेलीफोन सेवा प्रारम्भ की गई है, जिसका नम्बर 18001801717 है। अतः कृषक मौसम सम्बन्धी जानकारी इस फोन नम्बर पर प्राप्त करें।